Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2410III02V12P0007

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research
Issue–III(II), Volume–XII

देश खाप: एक परिचय

शोधार्थी—अतेश कुमार

संक्षेप—

देश खाप जाटों की एक प्रमुख खाप है, जिसकी स्थापना सुलक्षणपाल तोमर द्वारा की गयी। यह खाप जिला बागपत के बडौत क्षेत्र में प्रभावी रुप से कार्य कर रही है। इस खाप को सामान्य रुप से देश खाप के नाम से जाना जाता है। देश खाप सलकलायन तोमर गौत्र के जाटों की खाप है। देश खाप का सामाजिक व राजनैतिक रुप से बड़ा महत्व है।

कीवर्ड—

देश, जाट, चौधर, थांबा, तोमर, गौत्र।

समन्वय एक संश्लेषण के युग तटों के बीच प्रवाहित होने वाले भारतीय संस्कृति वह सदानीरा शाश्वती धारा है, जिसमें ने केवल इस देश की भौगोलिक सीमाओं में जन्मी पली जातियों का ही मान संचित ही किया वरन् वह तो अनन्त काल ''सर्वे भवन्तु सुखिना'' के महान लक्ष्य को धारण करते हुए समस्त विश्व के श्रेयस के लिए अमृत वर्षन करती है, ऐसी भरतीय संस्कृति और सभ्यता की कायम रखने, इसे शाश्वत बनाये रखने के लिये न जाने कितने विद्वानों, ज्ञानियों, ऋषियों, मनीषियों, राजाओं व महाराजाओं से अपना योगदान दिया अपना सर्वस्व न्यौछावर कर भारत की सभ्यता, संस्कृति को सुरक्षित रखा।

ऐसे ही एक महान व्यक्तिव के बारे में जो ऐतिहासिक पुरुष होते हुए भी जिनकी सन्तान देश के नाम से प्रख्यात क्षेत्र में निवास करती है, अर्थात् जिनसे देश खाप की स्थापना की, उसे आदर्श रुप से सुस्थापित किया तथा राजगद्दी छोड़ कर एक नई राजनैतिक प्रणाली (व्यवस्था) चौधर को प्रस्तुत किया तथा उसे समुज्जवल किया[1]। जिसके अविर्भाव से समस्त सामाज्य अपने थम्ब कंठ के गौरव की माला धारण की हिन्द देश की राजधानी दिल्ली, में लाल कोट जैसा सुदृढ किले का निर्माण कराया, इसकी सन्तति ही जो आज भी उसी के नाम धारण किये हैं, सलकलायन तोमर कहलाते हैं।[2] कन्चन, कामिनी और कीर्ति की अत्यधिक वांछनीय त्रिमुर्त्रि राजपाट को छोड़कर नम्रता, भाईचारा और त्याग की अत्यधिक दुलर्भ त्रिमूर्ति को अपनाने वाले सलक्षण देव तोमर ने देश की स्थापना कर चौधर प्रणाली की शुरूवात की। अत: लक्ष्य के प्रति दत्तचित होने से सलक्ष्यपाल के नाम से पुकारा गया, वैसे आम लोगों में इनका नाम सलकपाल तोमर ही प्रचलित है। जिस दिन इनका जन्म हुआ, उसी दिन उनके पिता गोपाल देव का राज्याभिषेक हुआ था। इसे अच्छा (शुभ) लक्षण मानते हुए इसे सुलक्षणपाल देव के नाम से भी पुकारा गया। इसी के नाम से मुद्राएं भी चालू की गयी जो आज भी विभिन्न संग्रहालयों में उपलब्ध है। सुलक्षणपाल देव की मुद्राएं उन्हें स्वतन्त्र. राजा होने की पुष्टि करता है और चम्बल से सरस्वती तथा यमुना से सतलुज तक फैली उनकी सीमा उसे सम्राट कहलाने का अधिकारी बनाती है। सलक्षणपाल देव एक ऐतिहासक पुरुष रहे हैं, जिन्होंने समन्त देश पर राज किया, जो कालांतर में कुरुक्षेत्र और दिल्ली का प्राय बना[3] राजस्थान के ग्रन्थों में यह शुवलु सुलक्षणु के नाम से पुकारा गया है तथा कई ग्रन्थों में इसे सुवरी के नाम से पुकारा गया है, जबकि राजस्थान तथा मालवा के राजाओं के द्वारा यह रावलु सुलक्षणु के नाम से जाना गया। इन्हें मात्र 18 वर्ष की आयु में राजगद्दी पर बैठाया गया था। इन्होंने 25 वर्ष 10 माह 10 दिन शासन किया। जिस क्षेत्र पर सुलक्षण पाल द्वारा राज्य किया गया वह क्षेत्र कभी विशाल हरियाणा कहलाता था।

बाद मे दिल्ली राज्य कहलाया, इसी क्षेत्र में और भी खापों, पालों, थाम्बों का प्रचलन है। आज भी खापों में चौधर का असित्व बना हुआ है। इसी सलक्षणपाल के वंशज आगे चलकर सलकलायन कहलाये जो बाद में बड़ौत के आस–पास के क्षेत्र में 'देश' के नाम से विख्यात खाप के लोगों के रूप में निवास कर रहे हैं। राजा सलक्षणपाल देव समस्त देश के राजा थे और जाट थे। आज भी उसी के नाम धारण करने वाले जाट बड़ौत के आस–पास 84 गाँव के जनपद 'देश' में उसी के वंशज सलकलायन तोमर कहलाते हैं।

सलक्षणपाल तोमर ऐसे युग पुरुष रहे हैं जातीय विद्वेष राजनीतिक अस्थिरता और लूट के वातावरण को आपसी भाईचारे में बदलने के लिए कोई अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक न कहलाये। इस समस्या के निराकरण के लिए सलक्षण पाल तोमर द्वारा एक नई शासन प्रणाली, नई राजनैतिक विचारधारा को जन्म दिया जो चौधर कहलाई, जिसमें सर्व जातीय सम्भाव का पार्दुभाव हुआ तथा संरक्षणात्मक शासन का प्रचलन हुआ जिसके माध्यम से एक ऐसे समाज की स्थापना की गई जो गरीबी, भुखमरी, विषमता और युद्ध की विभिषिका से मुक्त हुआ।[4] इसी सन्दर्भ में विजय राव ने बालियान चौधर की स्थापना की। उसे पहले लाल गोत्र वाले नयनपाल अर्फ बाबा नैया के नाम पर हूलेराम वंशजों ने गठवाला में मलिकों की चौधर इसी इलाके में सुस्थापित की। जगदेव पॅवार ने पवारों की, छित्तर सिंह ने चौहानों की चौधर, देश खाप के समीप ही सुस्थापित की। इसी प्रकार दांगड़, सरफा, दंगडा, खोखर, चौगामा, छपरावल, राठी, दहिया, गुर्जर एवं रवों ने देश खाप के समीप ही अपनी चौधर कायम की और स्थायी रुप से यहीं बस गये। अत: आज के सामजिक, राजनतिक विषाक्त वातावरण में सलक्षण पाल तोमर द्वारा प्रतिपादित चौधर अति प्रासंगिक हैं। चौधर का आधार निर्वाचन था और निवार्चन समस्त प्रजा हुआ करती थी। प्रत्येक बिरादरी जाति अपने–अपने प्रतिनिधि चौधरी छाँटती थी जो उस अपनी बिरादरी जाति का विशेष अधिकार प्राप्त सम्मानित व्यक्ति होता था जो अपनी जाति से सम्बन्धित सम्पूर्ण जिम्मेदारी का प्रतीक होता था। चौधर एक प्रकार की धरोहर मानी जाती थी। जिसे देश, क्षेत्र की समृद्धि उन्नती चौधरी के हाथौं में सौंपी जाती थी। चौधरी का कर्तव्य प्रजा की आर्थिक या भौतिक उन्नति ही नहीं अपितु नैतिक उन्नति भी होती थी। चौधरी को किसी भी प्रकार की मनमानी करने का अधिकार नहीं था।

सलकपाल ने सभी की भावना से सर्वप्रथम जो ''चौधर'' कायम की थी उसका नाम ''सर्व कल्याण'' चौधर रखा था पहले चौदह–चौदह गाँवों के चौधरी छाँटकर फिर चौरासी गाँवों को मिलाकर जिस चौधर का निर्माण किया उसी सुन्दर व्यवस्था, सामाजिक समायोजन के कारण वह चौधर अपने आप में पूर्ण होने से ''देश'' के नाम पुकारी जाने लगी।[5] सर्वखाप पंचायत के मंत्री कबूल सिंह ने देश खाप के संबंध में लिखा है वह खाप पहले से ही समाज सेवा, स्वदेश रक्षा तथा राष्ट्र के संगठन, उन्नति मातृभाव, समता, न्याय, सदाचार, ईश्वर भक्ति तथा धर्मज्ञानुष्ठान के शुभ कार्यों के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य करती रही है/थी। देश खाप की चौधर का मुख्य कार्य संरक्षात्मक प्रशासन था। अत: उनकी यह चौधर जाटों की पहले चौधर कहलाई।

इस जनपद को इस समय में सलकलायन जनपद बुलाया गया था, इस गणराज्य को बाद में ''देश'' के रूप में जाना जाने लगा जो आज भी है यदि वास्तव में वहाँ एक देश है तो यह तोमर (सलकलायन) देश खाप का है।

''चौधर'' गणराज्यों की व्यवस्था के रूप में अस्तित्व में था जहाँ एक गोत्र के सदस्य एक कबीले में एक साथ रहते थे और सम्राट के साथ अपने रिश्तों को बनाए रखते थे। इस तेजी से

विकास में प्रत्येक कबीले में अपने स्वंय के खाप विकसित होते चले गए, चौधर में संघर्ष को पंचायत या पांच साल की परिषद् के माध्यम से निपटाते थे। यह परिषद् और इसका मुखिया चौधरी आपसी सहमति से चुना जाता था।

देश खाप का प्राचीन मुख्यालय किशनपुर बिराल गाँव में था इस गाँव में ही न्याय किया जाता था सलकपाल देव ने इस गाँव में न्याय जंजीर स्थापित की बाद में यह मुख्यालय बड़ौत में स्थापित हुआ।

तोमर देश खाप के 84 गाँवों की स्थापित चौधर

1- बडौत में 14 गाँवों की पहली चौधर चौधरी रामपाल तोमर ने आयोजित की
2- बावली में 14 गाँवों की पहली चौधर चौधरी राव महिपाल तोमर ने आयोजित की
3- किसानपुर(किशनपुर) बिराल में 14 गाँवों की पहली चौधर कृष्णपाल तोमर ने आयोजित की।
4- बिजरौल में 14 गाँवों की पहली चौधर चौधरी चंद्रपाल तोमर ने आयोजित की
5- बामडौली में 14 गाँवों की पहली चौधर चौधरी हरिपाल तोमर ने आयोजित की।
6- हिलवाड़ी में 14 गाँवों की पहली चौधर चौधरी शाहोपाल(शाहपाल) तोमर ने आयोजित की।

इसके अतिरिक्त पहली चौधर शाहपुर बड़ोली के 14 गाँवों में स्थापित किए गए थे जो कि कोइल (अलीगढ) में थे यहाँ पर सलकलायन तोमरों के 14 गाँव हैं जिनको सलकयान तोमर (काढिर) कहा जाता था। बाद में युद्ध काल में यह गाँव विलुप्त हो गये और अलीगढ़ जिले में ही बस गए जो अब सिर्फ तोमर ही लिखते हैं। कुछ को आज तक याद है जैसे सिरौटी गाँव के तोमर बागपत जिले के बूढपुर गाँव से जाकर वहाँ बसें हैं। बाद में बूढ़पुर को पट्टी मेहर के लोगों ने बसाया था, परन्तु अलीगढ़ जिले में आज तोमर जाटों के 28 गाँव और एक रियासत है जो बाद में पलवल के पास पृथ्ला गाँव से आकर आबाद हुए हैं।

देश खाप की सात थांबें जो देश खाप के अन्तर्गत कार्य करते हैं।

थांबा चौधरी व थांबे के ग्राम

1- बावली, जयपाल सिंह
गाँव—बावली, बरवाला, नसौली, जिमाना, जिमानी, छछरपुर, गुंगाखेड़ी, आधा कंडेरा, खड़ना, माजरा, फतेहपुर, पटनी झिझना, खड़खडी, जलालपुर, करीमपुर, रूस्तमपुर, महावतपुर, हैदरनगर, बासौली।
2- किशनपुर बराल, अशोक सिंह
गाँव—किशनपुर बराल, कासिमपुर खेड़ी, गड़ी कांगरान, बुद्धपुर, सूप, राजपुर, आमवाली, जखेड़ी, लपराना
3- बामनौली, देवेन्द्र सिंह
गाँव—बामनौली, मांगनोली, पुसार, रहतना, आधा रंछाड़, रामगढ़, गढ़ी बामनौली, मदीनपुर, बेगमाबाद गढ़ी, फजलपुर, पलड़ा, जलालपुर, सिक्का, इदरीशपुर
4- बिजरौल, यशपाल सिंह
गाँव—बिजरौल, सिरसली, जौहड़ी, बिजवाड़ा, आधा रंछाड, गढ़ी बामडोली, पुठी, आरिफ खेड़ी, आटा, गोरड़, द्वारका, गुंडान, कसरेट्टी, मातन हिल, हतवाला(जींद)

5- पट्टी मेहर, अलबेल सिंह
गाँव— पट्टी मेहर, ढिकाना, बड़ौली, गुराना, लोयन, आधी बड़ौत

6- पट्टी बारू, इलियास सिंह
गाँव—बडौत बारू पट्टी, मलकपुर, जौनमाना, सिक्का, मंसबगढ़, नीमखेड़ी, सभाखेड़ी

7- हिलवाड़ी, ओमबीर सिंह
गाँव—हिलवाड़ी, वाजिदपुर, लोहड़ा, शिकोहपुर, सादुल्लापुर

बाद में बड़ौत थाँबा दो भागों में बाँट दिया गया, जिसमें एक थाँबा पट्टी मेहर तथा दूसरा थाँबा पट्टी बारू कहलाया। 2003 में बावली गाँव में देश खाप ने सर्व खाप पंचायत बुलाई थी, जिसमें यूपी के अलावा हरियाणा व राजस्थान की 365 खाप के चौधरियों ने भाग लिया था। इससे पहले सन् 1197 ई० में राजा भीम देव तोमर (देश के राजा) की अध्यक्षता में बावली बड़ौत के बीच विशाल जंगल में सर्वखाप पंचायत की बैठक हुई थी, जिसमें बादशाह द्वारा हिन्दुओं पर जजिया कर लगाने तथा फसल न होने पर पशुओं को हांक ले जाने के फरमानों का मुँहतोड़ जवाब देने के लिए ठोस कार्यवाही करने पर विचार किया गया, इस पंचायत में करीब 100000 लोगों ने भाग लिया, पंचायती फैसले के अनुसार सर्वखाप की मल्ल सेना ने शाही सेना को घेर कर हथियार छीन लिए और दिल्ली पर चढ़ाई करने का ऐलान किया। बादशाह ने घबराकर दोनों फरमान वापिस लेकर पंचायत से समझौता कर लिया[6]।

श्री सुखवीर सिंह के निधन के बाद उनके बड़े पुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह को इस देश खाप के चौधरी के रूप में मनोनीत किया गया है। देश खाप का इतिहास लगभग 1000 साल पुराना है। आज भी खाप पूरी तरह से अस्तित्व में हैं और खाप के फैसलों की आज भी मान्यता है।

देश खाप के चौधरी सुरेन्द्र सिंह बताते हैं कि 84 गाँवों को मिलाकर देश खाप बनाई गयी थी। इसमें छः चौधर शुरु की और इसको चौरासी(84) के कुल और 84 की चौधर के रूप में जाना गया और फिर 14 गाँवों और अन्त में प्रत्येक समुदाय के चौधरी 84 गाँव के स्तर पर उनके चौधरियों को चुना गया, जिन्होंने अपने लोगों की सेवा का काम अपने हाथों में लिया और लगातार ऐसा करने के लिए तैयार थे इसे ही जाट चौधरी जनपद कहा गया। खाप के चौधरी समय—समय पर बदलते रहे, लेकिन खाप के उद्देश्य वही रहे।

1857 में देश खाप के चोधरी श्योसिंह स्वतंत्रता संग्राम में शहीद हो गए थी। 1857 में ही इस खाप के बाबा शाहमल ने देश के लिए अपनी कुर्बानी दी, उसके बाद गोविंद सिंह, हरबंश सिंह व सुखवीर सिंह ने देश खाप की कमान संभाली। खाप की कमान अब चौ० सुरेंद्र सिंह के हाथ में हैं। चौ॰ बताते हैं, खाप ने समय—समय पर लोगों को जागरूक कर आगे बढ़ाने का कार्य करती चली आ रही है।

देश खाप के गाँवों की सूची।

देश खाप के अन्दर मूल रूप में 84 गाँव आते थे जो अब बढ़कर 135 हो गए हैं। बावली और उसके आस—पास के गाँव से व्यापारी लोगो के द्वारा मुरादाबाद जाकर 14 गाँव बसाये हैं। बागपत जिले सें तोमरों ने कुल 7 ग्राम हरियाणा में बसे है, हालांकि हरियाणा में तोमर (तंवर) जाटों के बहुत से गाँव हैं पर देश खाप के तोमरों के 7 गाँव है। बागपत जिले के जोहड़ी गाँव के तोमर जाटों ने सोनीपत में गोरड (गोरद) गाँव बसाया था जिनको गोरदिया तोमर भी बोला जाता है, मोर

खेड़ी (रोहतक) को जौनमाना गाँव के तोमरों ने बसाया है तो गुढ़ाना और द्वारिका को अंगदपुर और जोहड़ी के तोमरों ने बसाया है।

तोमर गोत्र के देश खाप के 84 **गाँवों की सूची**:—

1- आदमपुर, 2. आमवाली, 3. अलावलपुर, 4. अमलापुर, 5. अन्छाई(रंछाड़), 6. औरंगाबाद जाटोली, 7. असर्फाबाद, 8. बडाका, 9 शाहपुर बड़ोली, 10 बालीतपुर, 11. बामखेड़ी या बामणखेड़ी, 12. बामनौली/बामडौली, 13. बरनावा, 14 बड़ौत—देश खाप की राजधानी, 15 पट्टी बारू, 16 बावली, 17 बिहारी, 18. बिजरौल, 19. बिजवाड़ा, 20. बिसल, 21. बोहाला, 22 बुद्धपुर, 23. बरवाला, 24. चारजखेड़ा, 25. चौभली, 26. चीलोरा, 27. ढिकाणा, 28. फतेहपुर, 29. गढ़ी—अंछड़, 30. गौरीपुर, 31. गुगाखेड़ी, 32. गुराना, 33. हैदरनगर, 34. हारा, 35. हिलवाड़ी, 36. ईदरीसपुर, 37. अलालपुर, 38 पट्टी मेहर, 39. जीमाना, 40. जीमानी, 41. जोहाड़ी, 42. जोनमाना, 43. कैडावा, 44 काम्बाला/कम्बला, 45. कंडेरा, 46. कानगुरा की गढ़ी, 47 करीमपुर, 48 कासिमपुर, 49 खड़ाना, 50 खड़खड़ी, 51. खेडकी, 52. कासिमपुर खेड़ी., 53. खेड़ी, 54. खिवाई., 55. किशनपुर (किसानपुर बिराल), 56. खूटाना, 57. लढ़ावड़ी, 58. लोहद्दा, 59. मक्खड, 60. मलकपुर, 61 मांगडोली, 62. माज़रा, 63.. नसौली, 64. पीपलसाना, 65 नीरोजपुर, 66. नुवादा, 67. ओढ़पुर, 68. पूसर, 69. पूठ (पूटथी), 70. रहेटना, 71 भराला, 72. शिकोहपुर, 73. सिक्का, 74. सिरसलगढ़, 75. सिरसली, 76. सिसाणा, 77. सौंटी, 78.सूप, 79. ठसका (थास्का), 80. तोहड़ी, 81. माहावतपुर, 82. रूस्तमपुर, 83. छतरपुर, 84. बेगमाबाद गढ़ी अब 85. झिंझारपुर, 86. जिठौली मुरादाबाद 87, ग्वारु, 88. सदरपुर, 89. शादीपुर, 90 कासमपुर, 91 अन्जेरा, 92 दयानाथपुरा, 93. कोकरपूर, 94 धरमपुर, 95 कुचावली, 96 फूलपुर, 97 महेशपूर, 98 फत्तनपुर 99 गुढ़ाना (रोहतक), 100 मोरखेड़ी (रोहतक), 101 गोरद (सोनीपत) 102 मातनहेल (झज्जर) 103 छोटी गुढ़ाना (भिवानी) 104 द्वारका (भिवानी), 105 नया गाँव (रेवाड़ी) 106 बड़ी बाह (रोहतक), 107 बखेता (रोहतक), 108 ढराणा (झज्जर) 109 बरडू चैना (भिवानी) 110 जजवन (जींद) 111 हथवाला (जींद) और कुछ गाँव जो देश खाप के अन्दर आते हैं के 14 गाँव के तोमरों के कहने पर जो वह देश खाप से जाकर बसे अब वो देश खाप में माने जाते हैं। हरियाणा में जो 7 गाँव बागपत में से निकलकर जाकर बसे हैं। अब इन सात गाँवों से और भी गाँवों बस गए हैं उनके चौधरियों की एक मीटिंग देश—खाप के चौधरी के साथ हुई और वो देश खाप के अंदर माने जाने लगे क्योकि वो मूल से देश खाप के तोमर थे, लेकिन इनमें से अधिकांश गाँव हरियाणा की अलग—अलग खापों में हैं जैसे मातनहेल गाँव, नोगांवा खाप में है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- डा० महक सिंह देव प्रधान, तोमर रतन समन्त सम्राट सलक्षण पाल देव तोमर, जायको फाईन प्रिन्टर्स, मेरठ, 2011 पृ०11
2- वही पृ०12
3- कर्म सिंह, तोमर राजवंश, पृ०132
4- डा० महक सिंह देव प्रधान, तोमर रतन समन्त सम्राट सलक्षण पाल देव तोमर, जायको फाईन प्रिन्टर्स, मेरठ, 2011 पृ०25
5- वही, पृ०30
6- भलेराम बैनीवाल, जाट योद्धाओं का इतिहास मुद्रक—लाईफ प्रेस, ग्रीन बिल्डिंग रेवले रोड़ करनाल—132001 पृ०253